मोरंगे

मार्च–अप्रैल 2016

इस बार

मनीषा सैनी,
उम्र–9 वर्ष
समूह–रौशनी

खिड़की

3 मेरी बात

कविताएँ

4 पौधा / गुलगुला
5 बिल्ली मौसी / भालू
6 स्कूल जाबा दे

कहानियाँ

8 बिजुका
9 रानी और मोहन
10 गाय नहीं तो दूध नहीं
11 कनू और मनू
12 मदारी का डमरू
13 चालाक आदमी
14 भूखा शेर

याद की धूप–छाँव में

15 गाय
16 गिलहरी का बच्चा

बात लै चीत लै

17 वर्णमाला

18 मटरगश्ती बड़ी सस्ती

19 हीहीही–ठीठीठी

25 कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ

26 तेरी मेरी, मेरी तेरी बात

सम्पादन : विष्णु गोपाल मीणा
सहयोग : उदय पाठशालाओं के बच्चे व शिक्षक
डिज़ाइन : अश्विनी कुमार पंकज
प्रूफ़ : विजय सिंह
वितरण : जितेन्द्र अग्रवाल

प्रबंधन
विजेन्द्र पाल
सचिव, **ग्रामीण शिक्षा केन्द्र**
आवरण पर चित्र :
जय सिंह,
उम्र–10 वर्ष, समूह–तिलक

मार्च–अप्रैल 2016, वर्ष 6, अंक 69–70

मोरंगे' का प्रकाशन 'यात्रा फाउण्डेशन' आस्ट्रेलिया एवं 'हैसली फैमिली फाउण्डेशन' के सहयोग से हो रहा है।

पत्रिका का पता

मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
हॉटल सिटी हार्ट के सामने,
रणथम्भौर रोड़, सवाई माधोपुर
राजस्थान 322001

फोन : 07462–220957
फैक्स : 07462–220460

मेरी बात

गोलू गुर्जर,
समूह–फूल,
उम्र–11 वर्ष

जीजी कु मैं तंग करुँ।
या काका से जंग करुँ।।
सुबह झूले में सोता हूँ।
रात हुई तो रोता हूँ।।

मिल जाए बहना की कॉपी।
तो रंग कॉपी में भरता हूँ।।
हाथ लगे जब मोबाईल।
तो बात नानी से करता हूँ ।।

मैं बाल खींचू मामा के।
उंगली पकड़ू बूआ की।।
कोई भी न काम करे।
सब हो मेरे पास खड़े।।

दूध पीना मैं न चाहूँ।
टॉफी–बिस्कुट लाओ मुझे।।
या दूध भी पी जाऊँगा।
साईकिल पर घुमाओ मुझे।।

काम अपना छोड़ दो।
मेरा खिलौना जोड़ दो।।
डोली पर मैं चढ़ रहा हूँ।
ध्यान रखो मैं फिसल रहा हूँ।।

विष्णु गोपाल

कविताएँ

पौधा

योगेश एक पौधा लाया।
रामवीर ने गढ्ढा खोदा।
रामलखन ने पौधा लगाया।
दिलखुश ने पानी डाला।
रामकेश ने खाद डाला।
सबने मिलकर बाड़ लगाई।
बारी–बारी करे रखवाली।
धीरे–धीरे पेड़ बना।
पेड़ में आए मीठे फल।
पाँचों ने मिल कर खाए फल।

योगेश मीना,
उम्र–12 वर्ष, समूह–गाँधी

गुलगुला

छुट्टी हुई खेल की।
चढ़ी कड़ाई तेल की।
सुर–सुर उठता बुलबुला।
छुन–छुन सिकता गुलगुला।
भुलभुला और पुलपुला।
मीठा मीठा गुलगुला।

राजेश बैरवा, उम्र–9 वर्ष, कक्षा–3

दिलखुश, समूह–तिलक

बिल्ली मौसी

बिल्ली मौसी, बिल्ली मौसी,
तुम कहाँ से आई हो?
प्यारे बच्चों, प्यारे बच्चों,
मैं दिल्ली से आई हूँ।
बिल्ली मौसी, बिल्ली मौसी,
तुम क्या–क्या लाई हो?
प्यारे बच्चों, प्यारे बच्चों,
मैं खेल–खिलौने लाई हूँ।
बिल्ली मौसी, बिल्ली मौसी,
हमको खेल खिलाओ ना।
प्यारे बच्चों, प्यारे बच्चों,
छुक–छुक रेल चलाओ ना।
बिल्ली मौसी, बिल्ली मौसी
अपना नाच दिखाओ ना।
प्यारे बच्चों, प्यारे बच्चों
ताली–ढोल बजाओ ना।
बिल्ली मौसी, बिल्ली मौसी
मेरे घर भी आओ ना।
प्यारे बच्चों, प्यारे बच्चों
पहले पढ़कर आओ ना।

विष्णु सोनवाल,
समूह–रोशनी, उम्र– 10 वर्ष

भालू

करन नाई, करे बढाई।
सौ रूपये की लाया लुगाई।
मन लगा कर करे पढ़ाई।
एक दिन निकल पड़ा बाजार।
नौ रूपये के लाया आलू।
रास्ते में मिल गया भालू।
भालू के थे लम्बे बाल।
काले–काले चिकने गाल।
लम्बी–लम्बी उसकी मूंछ।
छोटी सी थी उसकी पूंछ।
चार थे उसके मोटे पैर।
खाता रहता दिन भर बेर।
लाल–पीली उसकी आँख।
मोटे–मोटे उसके दाँत।

जितेन्द्र नायक,
उम्र–11 वर्ष, समूह–वीर शिवाजी

मोहित मीना,
10 वर्ष, समूह–रौशनी

स्कूल जाबा दै

स्कूल जाबा दै मनै।
पढ़कर आबा दै मनै।
जमकर खाबा दै मनै।
खूब हँसबा दै मनै।
खूब पढ़बा दै मनै।
कुछ बनके दिखाबा दै मनै।
स्कूल जाबा दै मनै।
मेडम बनबा दै मनै।
काम करबा दै मनै।
कविता लिखबा दै मनै।

सपना मीना,
समूह–फूल, उम्र–10 वर्ष

रामधनी, उम्र–8 वर्ष, समूह–सागर

बिजुका

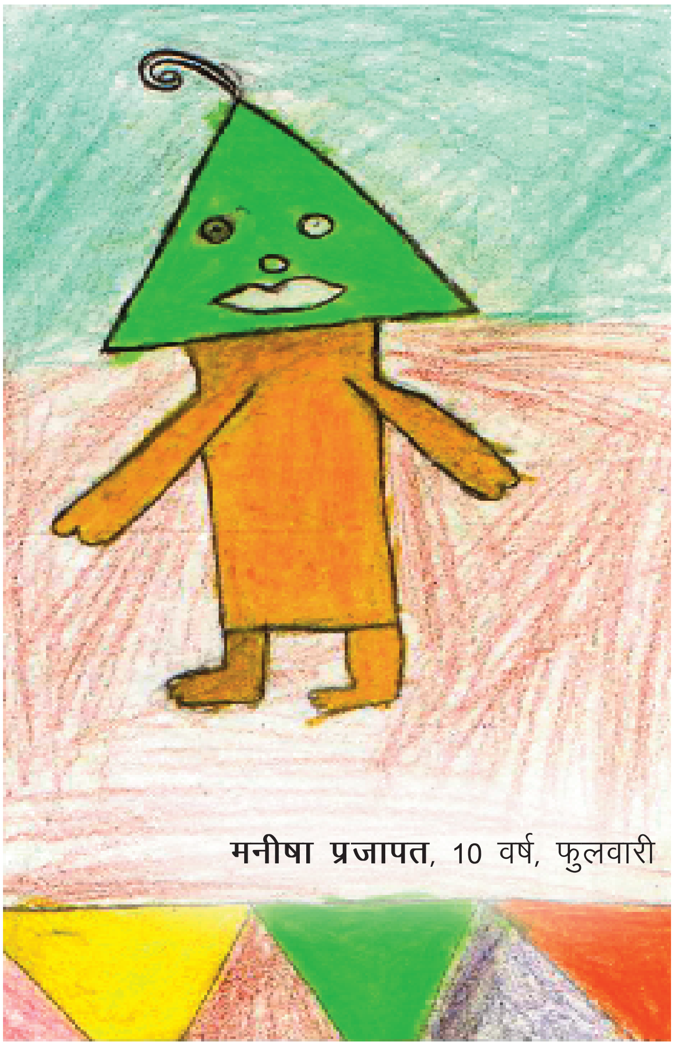

मनीषा प्रजापत, 10 वर्ष, फुलवारी

एक बार दो दोस्त थे। दोनों के खेत भी पास–पास ही थे। दोनों दोस्त साथ–साथ ही खेतों पर जाते थे। एक दिन खेत से वापस घर आने में उन्हें देर हो गई। चलते–चलते रात हो चुकी थी। रात के अंधेरे में उन्हें एक नर–कंकाल दिखता है। वे दोनों भयभीत हो जाते हैं और जैसे–तैसे करके घर तक आते हैं। घर आने के बाद भी मन में समाया डर उन्हें बार–बार भयभीत कर रहा था। उनके चेहरों पर नजर आ रही उदासी को भांप घरवालों ने पूछा तो उन्होंने सब साफ–साफ बता दिया। परिजनों ने खाना खाकर आराम से सोने के बात कही। अगले दिन उनके घरवाले उन्हें किसी साधू के पास लेकर गये। साधू ने बताया कि इन पर भूत का साया है। भूत को भगाना पड़ेगा। घरवालों ने साधू को भूत भगाने हेतु 5000/– रूपये दिये और वापस घर आ गये।

एक दिन दोनों दोस्तों के घरवाले आपस में भूत वाली चर्चा कर रहे थे। वहीं एक पढ़ा–लिखा–समझदार नौजवान भी खड़ा–खड़ा उनकी चर्चा सुन लेता है। वह नौजवान घरवालों से कहता है कि, ''कोई भूत–वूत नहीं होता है। आप मेरे साथ उस जगह पर चलकर सच्चाई का पता लगा सकते हैं।'' रात होते ही दोनों दोस्त, उनके घरवाले और वह नौजवान वहाँ जाकर टॉर्च की रोशनी में देखते हैं। वहाँ पर उनके ही गाँव के एक किसान ने पशुओं से फसल के बचाव हेतु घास–फूस का पुतला बनाकर उसे सफेद कपड़े पहनाकर खेत में खड़ा करके रखा हुआ था। जिसे गाँव में बिजुका या अड़वा कहते हैं। हकीकत जानकर दोनों ने आपस में तय किया कि साधुओं के चक्कर में कभी नहीं पड़ेंगे।

राधिका शर्मा, उम्र–13 वर्ष, समूह–शीशम

रानी और मोहन

एक बार एक बच्चा था, उसका नाम मोहन था। उसके पास एक नन्हीं भेड़ थी। उसने सोचा कि मैं भेड़ के लिए घुंघरू लाऊँ, भेड़ के पैर में घुंघरू बहुत अच्छे लगेंगे, लेकिन घूंघरू लाने से पहले भेड़ का नाम रखना चाहिए। यह सोचकर उसने अपनी

मंगल सिंह,
कक्षा–7

भेड़ का नाम रानी रखा। फिर मोहन बाजार गया उसने देखा कि एक बच्चा घुंघरू खरीद रहा था। वह मन ही मन सोचने लगा कि मैं भी घुंघरू खरीद लूँ। मोहन उस दुकान पर गया, घुंघरू खरीदे और वापस आ गया। उसने रानी के पैरों में घुंघरू पहनाये और उसे नहलाया। रानी बहुत खुश हुई। फिर मोहन और रानी खेलने लगे। रानी ने मोहन को छुआ और रानी भागी तो फिर मोहन उसको छू ही नहीं पाया।

धर्मसिंह गुर्जर, उम्र–9 वर्ष, समूह–फुलवाड़ी, राजकीय प्राथमिक विद्यालय बोदल

गाय नहीं तो दूध नहीं

एक बार एक किसान अपने खेत में जा रहा था, अचानक रास्ते में उसके सामने शेर आ गया। शेर को बहुत भूख लग रही थी। उसने किसान से कहा कि, ''मुझे बहुत जोर से भूख लग रही है, मैं तुम्हें खाऊंगा।'' किसान ने कहा, ''तुम मुझे मत खाओ, मैं तुम्हें अपनी गाय दे दूंगा, तुम उसे खा लेना।'' शेर ने बात मान ली। किसान जल्दी से घर गया, अपनी घरवाली को सारी बात बताई और कहा कि, ''जल्दी से गाय दे दो।''

उसकी पत्नी ने उसको दो थप्पड़ लगाई और बोली, ''गाय नहीं तो दूध नहीं, दूध नहीं तो मलाई कहाँ से, मलाई नहीं तो लस्सी कहाँ? मैं गाय नहीं दूंगी। आप खेत पर चलो और शेर से कहो कि मेरी पत्नी गाय लेकर आ रही है, आप थोड़ी देर इंतजार कीजिए।'' इतने में ही किसान की पत्नी पुरूष का वेश बनाकर, बैल पर बैठकर जोर–जोर से हँसती हुई आती है। शेर डर कर भागने लगता है। रास्ते में उसे लोमड़ी मिली। लोमड़ी बोली, ''शेर मामा, क्यों भाग रहे हो?'' शेर बोला, ''अरे

आरती, प्रताप, उम्र–8 वर्ष

तुम भी भागो, राक्षसी आ गई है।'' लोमड़ी ने कहा, ''अरे मामा! वह तो किसान की पत्नी है, आप मेरे साथ वापस चलकर देखिए।'' शेर और लोमड़ी ज्यों ही घर के नजदीक आते हैं तो किसान की पत्नी जोर–जोर से हंसने लगती है। शेर डर के मारे थर–थर कांपने लगा और लोमड़ी भी घबरा गई। दोनों जंगल की ओर भाग गये। अब किसान बहुत खुश था।

सुरभी, उम्र–9 वर्ष, समूह– बरगद, रा.बा.उ.प्रा.वि. आवासन मण्डल।

कनू और मनू

एक सेठ था, वह झोपड़ी गाँव में रहता था। उस सेठ का नाम धनपाल था। उसके एक पत्नी और दो बेटियाँ थी। उसकी पत्नी का नाम रामफूली था और उसकी बेटियों के नाम थे कनू और मनू। दोनों बेटियाँ पढ़ती थी। कनू 10 साल की थी और मनू 8 साल की थी। कनू कक्षा 6 में पढ़ती थी और मनू कक्षा 4 में पढ़ती थी। दोनों बहने कभी झगड़ा नहीं करती थी। धनपाल बहुत अमीर था। वह अपनी बेटियों के लिए अच्छे–अच्छे कपड़े लाता था और गरीब बच्चों के लिए भी कपड़े लाता था। धनपाल दिल–दिलेर वाला आदमी था और उसकी पत्नी भी दिलवाली थी, लेकिन धनपाल की दोनों बेटियाँ अच्छे मन की नहीं थी। धनपाल गरीब बच्चों के लिए कपड़े लाता तो कनू और मनू बहुत उदास जो जाती। धनपाल और उसकी पत्नी अपनी बेटियों को बहुत समझाते लेकिन वह दोनों नहीं समझती। धनपाल ने एक उपाय सोचा कि मैं मेरा धन–माल सब, कुछ दिनों के लिए मेरे दोस्त श्यामू को दे देता हूँ। धनपाल ने धन–माल सब दे दिया। वे एक झोंपड़ी में रहने लग गये। फिर कनू और मनू बहुत गरीब हो गई। अब कनू और मनू को कोई भी व्यक्ति कपड़े देता तो वह ले लेती। फिर कनू और मनू ने सोचा कि, हमारे पापा भी गरीब बच्चों को कपड़े देते है तो हमें बुरा नहीं लगना चाहिए। हमें तो उनका साथ देना चाहिए। कनू और मनू सुधर गई।

नीरू, सागर, उम्र–9 वर्ष

धनपाल ने अपना धन–माल वापस ले लिया और वह अमीर हो गया। कनू–मनू ने सोचा कि पापा ने इतनी जल्दी अपना घर वापस कैसे ले लिया, ना तो धन दिया ना ही कुछ दिया। कनू–मनू ने अपने पापा से यह बात पूछी। धनपाल ने कहा कि, “मैंने यह सब तुम दोनों को सुधारने के लिए किया है।” कनू और मनू पापा से लिपट गई।

मीरा मीना, उम्र–11 वर्ष, समूह–सावन, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा।

मदारी का डमरू

एक मदारी था। एक दिन वह शहर में खेल दिखाने गया। वह शहर में गया तो सारे यात्री उसके पास आये और कहा एक अच्छा सा खेल दिखाओ। मदारी ने कहा, ''अच्छा सा खेल नहीं दिखा पाऊंगा।'' फिर सारे यात्री वहाँ से उठकर चले गये। यह देख मदारी बहुत दुःखी हुआ और वह रोने लगा। उसके पास एक साधु आया उसने मदारी से कहा कि, ''तुम क्यों रो रहे हो?'' मदारी ने कहा, ''साधु महाराज, मुझसे सभी यात्री नाराज हो गये हैं।'' फिर साधु ने उसको एक छड़ी दी और कहा कि, ''इस छड़ी से तुम जो भी कहोगे, छड़ी वही काम करेगी।'' मदारी ने उसे ले लिया। साधु वहाँ से चला गया। मदारी ने कहा छड़ी–छड़ी अच्छा सा खेल दिखा।

विजय, समूह–फुलवारी, उम्र–5 वर्ष

मदारी ने डमरू बजाया तो छड़ी नाचने लगी तो सारे यात्री खेल देखने आ गये। मदारी ने डमरू नीचे फेंक दिया तो छड़ी सभी यात्रियों को पीटने लगी। मदारी हँसने लगा और सभी यात्री रोने लगे। सभी यात्रियों ने कहा, ''तुम यह कैसी छड़ी ले आए?'' मदारी ने कहा, ''मुझे यह छड़ी साधु महाराज ने दी है।'' फिर सभी यात्री खुश हुए और उन्होंने मदारी से कहा, ''क्या यह छड़ी हमें एक अच्छा सा खेल दिखा सकती है?'' मदारी ने कहा, ''हाँ क्यों नहीं।'' मदारी ने छड़ी से कहा अच्छा सा खेल दिखा तो छड़ी नाचने लगी फिर मदारी ने कहा दूध का कटोरा ले आ तो छड़ी एक घर से दूध का कटोरा ले आई। सभी यात्री हँसने लगे। मदारी ने दूध पी लिया और छड़ी से कहा कि, ''छड़ी जाओ, कटोरे में सभी यात्रियों से रूपये ले आओ।'' छड़ी कटोरा लेकर चली और रूपये लेकर आ गई। फिर मदारी बहुत खुश हुआ और वह घर चला गया।

ममता बैरवा, उम्र–11 वर्ष, समूह–तिलक, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

चालाक आदमी

ममता साहू, शिक्षिका, रा.प्रा.वि. बोदल

एक बार एक शेर था। वह एक गुफा में रहता था। वह अपना भोजन एक गीदड़ से मंग. वाता था। एक दिन शेर ने गीदड़ से कहा, ''आज मेरे लिए अच्छा भोजन लाना।'' गीदड़ जंगल में भोजन लेने जाता है। उसे जंगल में पेड़ के नीचे एक आदमी आराम करता हुआ दिखाई देता है। गीदड़ शेर के पास वापस आता है और कहता है कि जंगल में एक पेड़ के नीचे आदमी आराम कर रहा है। शेर और गीदड़ दोनों ही वहाँ जाते हैं। शेर और गीदड़ की आवाज सुनकर वह आदमी जाग जाता है और दोनों को देखकर भाग जाता है। शेर कहता है कि, ''कल फिर यह आदमी आएगा तो इसे नहीं छोडूंगा।'' वह आदमी सोचता है कि कल मैं फिर से जाऊंगा तो यह शेर मुझे खा जायेगा। अब मैं क्या करूँ? वह एक नकली पुतला बनाता है और जंगल में छुप कर जाता है। वह उसी जगह पर पुतला रख देता है जहाँ षेर ने उसे देखा था। आदमी पुतले के चारों तरफ जाल बिछा देता है। वह दो–तीन आदमी को भी साथ में लेकर आता है और वे सब झाड़ियों में छिप जाते हैं। कुछ देर बाद शेर धीमी गति से वहाँ आता है और उस जाल में फँस जाता है। सब लोग उसे एक पिंजरे डाल देते हैं। आदमी पिंजरे को गहरे जंगल में ले जाकर खोल देते हैं जहाँ से षेर वापस गाँव की तरफ नहीं आ सके। जंगल के सभी जानवर खुश हो जाते हैं और आदमी भी खुशी से रहते हैं।

हिमांशु, समूह–शीशम, उम्र–13 वर्ष

धन्यवाद

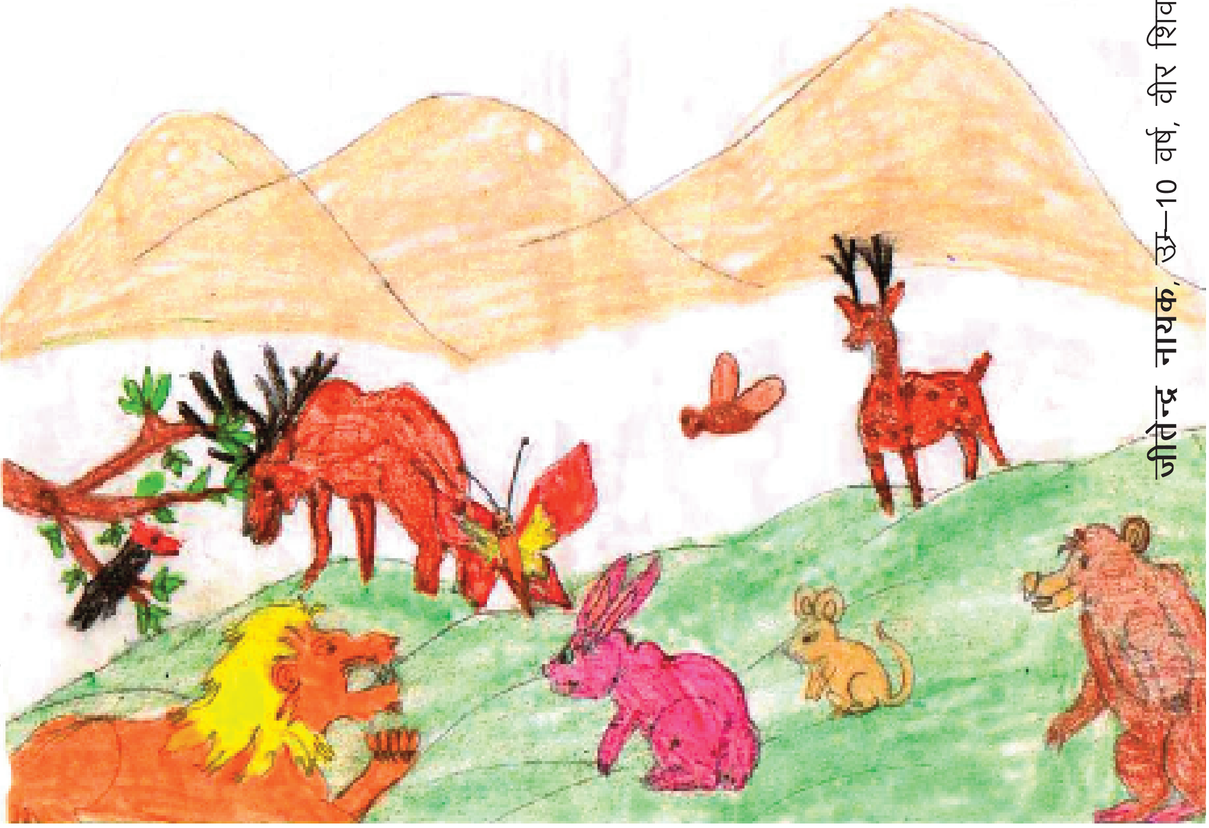

जीतेन्द्र नायक, उम्र–10 वर्ष, वीर शिवाजी

एक बार बहुत सारे जानवर जंगल में एक स्थान पर एकत्रित हुए थे। उनमें एक छोटी चिड़िया भी थी। चिड़िया को प्यास लगी तो वह पानी पीने तालाब चली गई। वह चिड़िया पानी पीने के लिए तालाब में उतरी ही थी कि पीछे से एक शेर आ गया। शेर पानी पीती हुई चिड़िया को मारकर खा गया। जब एकत्रित सभी जानवरों को चिड़िया की मौत का पता चला तो बहुत दुःखी हुए। उन्होंने शेर को सजा देने का प्रस्ताव सर्व सम्मति से पास कर दिया। शेर को प्रस्ताव का पता चला तो वह नाराज हो गया और एक–एक करके सभी जानवरों को मारकर खा गया।

पेट में जाकर सभी जानवरों ने फिर सभा की और शेर को सबक सिखाने के लिये योजना बनाई। सरपंच ने आदेश दिया खतरनाक और पैने पंजे वाले जानवर षेर के पेट को नोचना–खरोचना शुरू करें। थोड़ी देर बाद शेर के पेट में दर्द होने लगा। शेर दर्द से परेशान होने लगा। कुछ देर बाद शेर को खून की उल्टी हुई और सारे जानवर बाहर निकल आये। चिड़िया ने सभी को धन्यवाद दिया और वह उड़ गई।

भूमिका, उम्र–9 वर्ष, समूह–बरगद, रा.बा.उ.प्रा.वि. आवासन मण्डल

भूखा शेर

एक आदमी रोज भैंसों का दूध लेकर बेचने जाता था। वह आदमी पैदल ही आता–जाता था। एक दिन वह बहुत लेट हो गया, वापस आते समय उसको रास्ते में रात हो गई। रास्ते में उसे षेर मिल गया। शेर उस आदमी के सामने आ गया। आदमी काँपने लगा। शेर ने कहा, ''यह दूध मुझे पिला दे तो मैं तुझे नहीं मारूंगा।'' आदमी ने कहा, ''मुझे बहुत जोर से पेषाब आ रहा है। मैं पेशाब करके आ रहा हूँ

हिमांशु, उम्र–12 वर्ष, समूह–शीशम

फिर तुम्हें दूध पिला दूंगा।'' आदमी घर की तरफ निकल गया। फिर वह कभी भी दूध देने उस रास्ते पर नहीं आया। शेर देखता ही रहा। वह आदमी वापस लौटा ही नहीं और वह शेर भूखा ही रह गया। उस शेर को एक लोमड़ी दिखाई दी। वह शेर की तरफ ही आ रही थी। शेर भूखा था जिसके कारण उससे भागा नहीं जा रहा था। वह चुपचाप एक झाड़ के पास बैठ गया। ज्योंही लोमड़ी आई शेर ने उसे पकड़ लिया। लोमड़ी चालाकी से शेर से बोली, ''हे जंगल के राजा, मैं मेरे बच्चों से मिलने जा रही हूँ, वे घर पर अकेले ही हैं। अगर आप मेरे को खाओगे तो वे अकेले रह जायेंगे और भूखे–प्यासे मर जाएंगे। मुझे अभी खाने से तो अच्छा है आप मेरे बच्चों सहित ही मुझे खा लो।'' शेर ने सोचा जब तो मेरी पूरी भूख मिट जायेगी। षेर बोला, ''चल तेरे बच्चे कहाँ है?'' लोमड़ी शेर को लेकर चल दी। लोमड़ी शेर को उस जगह ले गई जहाँ जंगली सुअरों का झुंड रहता था। लोमड़ी उस झुंड में घुस गई। शेर सुअरों के झुंड को देखकर वापस लौट गया।

अशोक, उम्र–8 वर्ष, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

गाय

बुद्धिप्रकाश गुर्जर, उम्र–9 वर्ष, समूह–सागर

गाय दूध देती है। गाय के बच्चों को बछड़ा और बछड़ी कहते हैं। गाय गोबर करती है। गोबर को सूखाकर उसके छाने बनाते हैं। छाने जलाने व बाटी सेकने के काम लिये जाते हैं। गाय का बछड़ा बड़ा होकर बैल बनता है जो खेत में जुताई करता है। गाय के चार टांग, दो आँख, एक पूँछ, दो सींग, दो कान, एक पेट होता है। गाय की लोग पूजा करते हैं। गाय एक पालतू जानवर है। गाय सफेद, काली, भूरी रंग की होती है। गाय चारा, पत्ते, रोटी खाती है। गाय के काली, भूरी, सफेद नाक की होती है। गाय के पैर के खुर भूरे रंग के होते हैं। गाय का पेशाब बीमारी में काम आता है। गाय हमारी माता है। गाय को लोग कत्लखानों में भेज देते हैं। कई लोग गाय को थोड़े से रूपये के लिए बेच देते हैं। गाय ज्यादा तेज भाग नहीं सकती। गाय की आवाज 'माँ' शब्द के समान होती है। गाय को जब गुस्सा आता है तो वह अपने सींगों से मार भी देती है। गाय के दूध से दही, घी आदि बनते हैं। गाय को चराने वाले से ग्वाला और चरवाहा कहते हैं। दीपावली पर धतुरे से गाय के पेट पर ठप्पे लगाते हैं। गाय का गोबर इकट्ठा करके गोवर्धन बनाते हैं। गाय को कृष्णजी भी चराते थे। गाय के खुर से बटन बनते हैं। गाय मर जाती है तब उसकी हड्डियों से खाद बनती हैं। उस खाद से अच्छी फसल होती है।

सोनू, उम्र–9 वर्ष, समूह–बरगद

गिलहरी का बच्चा

करन नायक, उम्र–10 वर्ष, समूह–वीर शिवाजी

एक गिलहरी मेरे घर में रहती थी। उस गिलहरी ने एक बच्चे को जन्म दिया। गिलहरी अपने बच्चे के लिए भोजन लेने चली गई थी। उस समय गिलहरी का बच्चा उसके घौंसले से नीचे गिर गया। मैं तब रोटी बना रही थी। अचानक ही वह बच्चा नीचे मेरे पास गिरा तो मैं डर गई। मैं इधर–उधर देखने लगी। मुझे गिलहरी का बच्चा दिखाई दिया। मैने मेरी बहन व मम्मी को बुलाया और कहा कि ऊपर घौसलें में से यह गिलहरी का बच्चा गिरा है। मेरी बहन ने उस बच्चे को हाथ में उठा लिया और मेरी भुआ की लड़की को डराने लगी। इतनी ही देर बाद गिलहरी अपने बच्चे को ढूंढने लगी। मेरी मम्मी ने कहा, ''इसको टंकी के पास ही रख दे। यह गिलहरी इसको अपने घौसले में ले जायेगी, नहीं तो यह मर जायेगा।'' गिलहरी अपने बच्चे को ढूंढ रही थी और बच्चा जोर–जोर से चिल्ला रहा था। गिलहरी उसकी आवाज सुनती–सुनती बच्चे के पास पहुँच गई। गिलहरी ने अपने बच्चे को दोनों हाथों से पकड़ कर मुँह में भर लिया और उसके धौंसले में ले गई। उसको जल्दी अपना घौंसला नहीं मिला। वह पूरी टापरी में घूमी। फिर उसको अपना घौंसला मिला। उसने बच्चे को घौंसले में रख दिया और फिर वह बाहर आ गई। गिलहरी वापस जल्दी घौसलें में नहीं गई तो मेरे भाई पिन्टू ने उसके एक झाड़ू की मार दी। मुझे यह बात अच्छी नहीं लगी पर गिलहरी डरकर जल्दी से घौंसले में चली गई। फिर उसका बच्चा और गिलहरी खुशी से रहने लगे।

सीमा मीना, समूह–खुशबू, उम्र–11 वर्ष

वर्णमाला

एक बार हिन्दी वर्णमाला के वर्ण आपस में बहस करने लगे कि कौन ज्यादा महत्वपूर्ण है। बहस इतनी बढ़ गई कि वे हाथापाई पर आ गये। सभी ने किसी श्रेष्ठ व्यक्ति के पास जाकर समस्या का हल निकलवाने पर सहमती बनाई। वे सरस्वती के पास गये। सरस्वती को अपनी समस्या बताई। सरस्वती ने कहा कि, यह तो एक कठिन समस्या है। मुझे कुछ समय चाहिए। आप लोग कल दोपहर में आना। सारे वर्ण अपने–अपने घर चले गये।

सीमा मीणा,
उम्र–10 वर्ष,
समूह–खुशबू

सरस्वती ने बहुत देर तक सोचा और एक तरकीब निकाली। अगले दिन दोपहर में सभी वर्ण सरस्वती के पास पहुँचे। सरस्वती सभी को एक पहाड़ के पास ले गई और कहा कि, ''सब एक–एक करके कूदो।'' अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः कूदे तो उनके मुँह से स्वयं की आवाज निकली बाकी के मुँह से आवाज नहीं निकली। तभी से इन सब को हिन्दी वर्णमाला के स्वर बना दिये। बाकी को व्यंजन बना दिये गये। व्यंजन स्वर के साथ ध्वनि करने लगे। इस तरह उनका झगड़ा भी मिट गया और स्वर व व्यंजन भी बंट गये।

जीवनेन्द्र सिंह, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

मटरगश्ती बड़ी सस्ती

भाषा की सहेलियाँ बूझो यार पहेलियाँ

मेवा रेबारी, उम्र–12 वर्ष, कक्षा–5

1 हर–हर हाली मोती जाली चाँद की बहिन सूरज की साली।

2 एक छोरी दो पर लेगा छः छटका नारा।
चोटी ऊपर फूंदो लादे, अर्थ बता दे प्यारा।

3 उघाड़ो पटेल उसके बारा मण मैल।

4 जिसका करते सब इंतजार, समय पर न आये तो सब बेकार।
ज्यादा हो जाये तो तबाही, कम हो जाये तो पड़े अकाल।

5 दादा कहने पर नहीं मिलते लेकिन बाबा कहने पर मिल जाते हैं।

सीमा, संजु, आरती, पपीता, शिक्षक–जीवनेन्द्र (खुशबू समूह)

उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

हीहीही-ठीठीठी

विकास बैरवा, उम्र–10 वर्ष, समूह–प्रताप

1. एक हाथी तालाब में नहा रहा था तो वहाँ पर एक चूहा आया और बोला, ''हाथी बाहर निकल।'' हाथी बाहर निकल आया और बोला, ''क्या है?'' चूहा बोला, ''मैंने तो ये देखा था कि तुमने मेरी चड्डी तो नहीं पहन ली।''

धर्मसिंह मीना, उम्र–12 वर्ष, समूह–खुशबू,
उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा।

2. एक बार दो बच्चे थे और एक टीचर था। टीचर ने एक बच्चे से पूछा, ''आमंत्रण किसे कहते हैं?'' बच्चे ने जवाब दिया, ''आम के नीचे भ्रमण किया जाता है उसे आमंत्रण कहते हैं।'' दूसरे बच्चे से पूछा, ''निमंत्रण किसे कहते हैं?'' उसने जवाब दिया, ''नीम के नीचे भ्रमण करते हैं उसे निमंत्रण कहते हैं।''

मोहित सैनी, उम्र–12 वर्ष, समूह–सावन,
उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा।

3. एक बार दो दोस्त थे। एक के तो दो बाल थे और दूसरे के एक ही बाल था। पहला दोस्त बोला कि मेरे पापा मेरे बालों से इतने खुश हैं कि मेरे बालों में झूला खाते हैं। दूसरा बोला कि मेरे पापा मेरे एक बाल से इतने खुश है कि मेरे बाल से कुएँ से पानी निकालते हैं।

आशा मीणा, समूह–सावन,
उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

मोरंगे जुलाई–अगस्त, 2015 के अंक में दी गई अधूरी कहानी को आगे बढ़ाते हुए बच्चों ने ये कहानी लिखी हैं–

एक कुम्हार के पास सुल्तान नाम का गधा था। कुम्हार उसे बड़े प्यार से रखता था। पर सुल्तान को कुम्हार का काम रास नहीं आता। एक दिन वह घर से भाग गया ...

फिर वह एक तालाब के पास गया और पानी पीने लगा। तभी अचानक एक आवाज आई। गधे ने चारों तरफ देखा तो उसे कोई नहीं दिखा। वह बहुत डर गया और वहाँ से भाग गया। वह भागता हुआ एक शहर में जा पहुँचा। उस शहर का नाम था रामदासपुरा। उस शहर में एक लड़का रहता था। लड़के को गधा अच्छा लगा। लड़का गधे के पास गया और कहा, ''हम दोनों दोस्त बन जाते हैं।'' गधे ने हाँ कर दी। सुल्तान और लड़का दोस्त बन गये। उस लड़के का नाम जीवेश था। जीवेश ने सुल्तान से कहा, ''आओ अब घर चलते हैं।'' सुल्तान लड़के के घर चल जाता है। वहाँ उसे बहुत सारे गधे मिल जाते हैं। सुल्तान वहाँ बहुत खुशी से रहने लगा। उसे वहाँ पर रोज समय पर खाना मिलता और जीवेश के साथ खेलता।

धर्मसिंह मीना, समूह–खुशबू, उम्र–10 वर्ष

गधा जंगल में चरने गया। चरते–चरते उसे प्यास लगी तो वह तालाब पर पानी पीने गया। जैसे ही वह पानी पीने लगा, मगरमच्छ ने उसको पकड़ लिया। इधर कुम्हार गधे को ढूंढने लगा। रास्ते में कुम्हार को एक किसान मिला। कुम्हार ने किसान से पूछा, ''तुमने मेरा गधा देखा है क्या?'' किसान ने कहा, ''मैंने तो नहीं देखा।'' कुम्हार जंगल की तरफ चल दिया। कुम्हार गधे को ढूंढते–ढूंढते थक गया तो उसे भी बहुत तेज प्यास लगी। कुम्हार पानी की तलाश करता–करता तालाब के पास पहुँच गया। जैसे ही वह पानी पीने लगा तो उसे गधे के चिल्लाने की आवाज सुनाई दी। उसने आस–पास गधे को ढूंढा तो देखा कि गधे को मगरमच्छ ने पकड़ रखा है। कुम्हार ने मगरमच्छ को लाठी मारी तो मगर ने गधे को छोड़ दिया और कुम्हार गधे को लेकर घर पर आ गया। अब गधे को कुम्हार से कोई परेशानी नहीं थी।

राजकीय विद्यालय स्वांस के बच्चों द्वारा।

मोरंगे सितंबर–अक्टूबर, 2015 के अंक में दी गई अधूरी कहानी–कविता को आगे बढ़ाते हुए बच्चों ने ये कहानी–कविता लिखी हैं–

एक जंगल था। उस जंगल में एक सियार रहता था। वह सियार बहुत चालाक था। एक दिन उसने जंगल में सुंदर सरोवर, हरी–भरी घास और एक बरगद का पेड़ देखा तो सियार ने सोचा मैं यहीं पर रह जाऊ और सभी जानवरों का राजा बन जाऊ। सियार बरगद के पेड़ के नीचे रह गया। एक खरगोश सरोवर में पानी पीने आया तो सियार बोला कि खरगोश तू यहाँ क्या लेने आया है? खरगोश बोला कि मैं तो पानी पीने आया हूँ। सियार बोला पहले मुझे राजा कहो.....

खरगोश बोला, ''अरे भाई मैं क्यों तुझे राजा बोलूँ। राजा तो शेर है। जो सभी जानवरों के पीछे खाने के लिए दौड़ता है।'' सियार शेर का नाम सुनते ही डर गया। उसने सोचा, अगर वो यहीं आ गया तो मुझे खा जायेगा। खरगोश बोला, ''डर गया न शेर का नाम सुनते ही।'' सियार बोला, ''मैं क्या करूँ?'' खरगोश बोला, ''तू मेरी बात मान, तू यहाँ से चला जा इसी में तेरी भलाई है।'' सियार वहाँ से चला गया। खरगोश फिर पानी पीकर चला आया।

नीरू गुर्जर, उम्र–9 वर्ष, समूह–सागर

पापा हमको बिस्कुट लाना,
आज शाम को जल्दी आना।....
करड़–करड़ बिस्कुट खाऊँगा,
रोज मजे उडाऊँगा।
और शाम को खाना खाकर,
तुम्हारे साथ सो जाऊंगा।

अशोक, उम्र–8 वर्ष,
उदय सामुदायिक
पाठशाला गिरिराजपुरा।

कल्पना गुर्जर, कक्षा–3

मोरंगे नवंबर–दिसंबर, 2015 के अंक में दी गई अधूरी कहानी–कविता को आगे बढ़ाते हुए बच्चों ने ये कहानी–कविता लिखी हैं –

बंटी नायक,
उम्र–12 वर्ष
समूह–गाँधी

एक माली था। उसके पास एक तोता था। उस तोते का नाम पिंटू था। पिंटू एक दिन उड़ रहा था तो उसे एक साँप दिखा। वह सोचने लगा कि कुछ जानवर ऐसे भी होते हैं। यह देखकर वह अचंभित रह गया। वह उससे बात करने नीचे उतर आया....

और बोला, ''साँप भाई, तुम धरती पर रेंगकर क्यों चलते हो?'' साँप बोला, ''मेरे भाई, मैं जन्म से ही धरती पर रेंगकर चलता हूँ, क्योंकि, हमारे पैर नहीं होते हैं।'' तोता बोला, ''हम किसी दूर जंगल में चलते हैं।'' वे जंगल में पहुँचे तो एक शिकारी ने उन्हें देख लिया। शिकारी ने जाल फेंका तो तोता उस जाल में फंस गया और जोर–जोर से चिल्लाने लगा। एक चूहे को तोते की आवाज सुनाई दी। वह चूहा तेजी से भागता हुआ आया और उसने जल्दी से जाल को काट दिया और तोते की जान बच गई फिर वे तीनों दोस्त बन गये।

जियालाल नायक, समूह–वीर शिवाजी, उदय पाठशाला फरिया

पिंटू साँप के बच्चे से बहुत देर तक बात करता रहा और बात ही बातों में दिन ढल गया। तोते ने देखा कि बहुत दिन चढ़ गया है। तोते को खाने के लिए टमाटर और मिर्च लाने के लिए माली के खेत पर जाना था। तोता जल्दी से खेत पर पहुँचा तो देखा कि खेत में खरगोश ने दो–चार टमाटर खा लिए। तोते को यह देखकर बहुत गुस्सा आया। तोता नीचे उतरा तो खरगोश ने कहा कि, ''तुम कौन हो?'' तोते ने कहा कि, ''मेरा नाम पिन्टू है और तुम कौन हो?'' खरगोश ने कहा कि, ''यह मेरा खेत है।'' तोता फिर माली के पास गया। तोते ने माली से कहा, ''अपने खेत पर एक खरगोश ने कब्जा कर लिया है।'' तोता माली को खेत पर ले आया। वहाँ जाकर माली ने देखा कि यह तो हमारा खेत नहीं है। फिर वे वापस आ गये।

जयसिंह मीना, समूह–वीर शिवाजी, उदय पाठशाला फरिया

और साँप के बच्चे से बोला, "तुम किस काम के लिए आए हो?" साँप का बच्चा बोला, "मैं घूमने के लिए आया हूँ।" पिंटू बोला, "तो चलो घूमने चलते हैं।" फिर साँप का बच्चा नीचे–नीचे चलने लगा और पिंटू उसके साथ उड़ने लगा। पिंटू को उस पर दया आ गई तो बोला, "रूको।" तो साँप का बच्चा रूक गया। पिंटू बोला, "तुम नीचे चल रहे और मैं ऊपर उड़ रहा हूँ, तुम्हें कैसा लग रहा होगा?" पिंटू बोला, "चलो हम कोई ऐसा उपाय सोचते हैं कि तुम भी मेरी तरह उड़ने लगो।" पिंटू को मोर के पंख दिखाई दिये। पिंटू बोला, "तुम ये मोर के पंख लगा लो।" उसने वे पंख लगा लिए फिर साँप का बच्चा भी पिंटू के साथ उड़ने लगा। सांप का बच्चा बोला की, "उड़ने में कितना मजा आता है।" फिर वे दोनों दोस्त बन गये।

थोड़ी देर बाद दोनों पिंटू के घर चले गये। वहाँ पहुँचने पर पिंटू से उसकी मम्मी और माली ने पूछा यह कौन है? पिन्टू ने बताया, "यह मेरा दोस्त है।" यह सुनकर उनको भी खुशी हुई।

राजेश बैरवा, समूह–वीर शिवाजी, उम्र–12 वर्ष

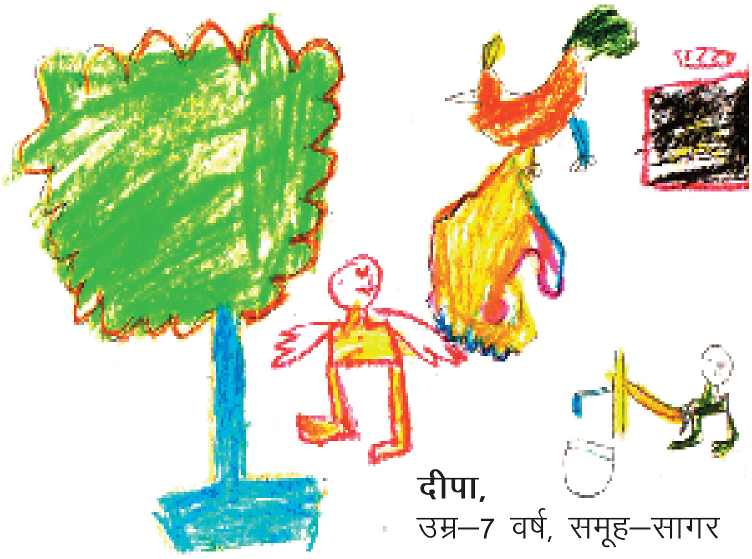

दीपा,
उम्र–7 वर्ष, समूह–सागर

और उससे कहा कि, "तुम ऐसे क्यों चलते हो? तुम मेरे जैसे उड़ो, मैं तुम्हें उड़ना सिखाऊंगा, तुम्हे मेरे जैसे उड़ना सिखा दूंगा। तुम जब जंगल में फल खाओगे तो तुम्हें बड़ा मजा आयेगा।" तोते ने उसे उड़ना सिखा दिया। अब साँप उड़ने लगा और आसमान को छूकर नीचे आ गया तो साँप को उड़ते देखकर उसके माता–पिता बहुत खुश हुए। अब तोता और साँप दोनों अच्छे दोस्त बन गये। तोता और साँप को उड़ते हुए एक बगीचा दिखाई दिया। वे दोनों उस बगीचे में गये। वह बगीचा आमों का था। तोते ने कहा, "पहले हम दोनों आम खायेंगे फिर अपने माता–पिता के लिए आम लेकर जायेगे, हमारे माता–पिता हमसे खुश हो जायेंगे। वे फल खायेंगे तो बड़ा मजा आयेगा।" आम को पहले साँप के बच्चे ने खाया फिर उसी आम को तोता खाने लगा तो साँप के बच्चे ने कहा, "मेरे दाँतों में तो जहर है। तुम यह आम मत खाना, नहीं तो मेरे दाँतों का जहर तुम्हारे पेट में चला जायेगा और तुम मर जाओगे। मैं अकेला रह जाऊंगा।" फिर उस तोते ने वह आम नहीं खाया उसने दूसरा आम खाया।

करण नायक, समूह–वीर शिवाजी, उदय पाठशाला फरिया

साँप जैसे ही उसे खाने के लिए लपका तो पिंटू ने कहा, ''अरे यार यह क्या कर रहे हो? मैं तो तुम्हारा दोस्त हूँ।'' साँप का बच्चा बोला, ''क्या बोला दोस्त?'' तोता बोला, ''हाँ हम दोनों दोस्त बन जाते हैं।'' साँप के बच्चे को भी यह बात अच्छी लगी। वे दोनों दोस्त बन गये और दोनों साथ में रहने लगे।

नीरू बाई, उम्र– 9 वर्ष, समूह–सागर

तोते ने साँप से कहा कि, ''तुम्हारे पैर नहीं होते हैं?'' साँप ने कहा, ''हमारे पैर नहीं होते हैं।'' तोते ने कहा कि, ''साँप, हम नदी में पानी पीने चलें?'' साँप ने कहा, ''चलो।'' तोता और साँप दोनों नदी में पानी पीने लगे। तोते के मुँह में मछली आ गई। साँप ने कहा, ''तोते तेरे मुँह में यह क्या आ गया है?'' तोता बोला, ''मेरे मुँह में मछली आ गई है।'' साँप ने तोते के मुँह से मछली को निकाल कर मार दिया और साँप मछली को खा गया।

पवन गुर्जर, समूह–सागर, उम्र–9 वर्ष

तोते ने साँप से पूछा कि, ''आपके पैर नहीं होते?'' साँप बोला कि, ''मेरे पेर नहीं होते हैं, मैं तो ऐसे ही चलता हूँ।'' तभी वहाँ से एक खरगोश गुजर रहा था। अचानक उसे साँप व तोता बात करते दिखाई दिये। खरगोश ने तोते से कहा, ''ओ तोते ओ तोते, वह तो साँप है।'' तोते ने साँप का नाम सुना तो तोता फर से उड़ गया और साँप उसे देखता ही रह गया।

गोलू गुर्जर, समूह–फूल, उम्र–10 वर्ष, राजकीय प्राथमिक विद्यालय बोदल

रात में आई दीवाली,
दिन में आई लाली....
खेत की करे रखवाली,
रजनी को बुलावे लाली।
आवाज सुने लाली,
खेत में जावे काली।
पक्षी उड़ावे लाली,
फसल में पड़ गई बाली।
तोड़ कर लावे लाली,
सेक कर खावे काली।
झाड़ू लावे काली,
साफ करे लाली।
स्कूल जावे लाली,
काम करे काली।

धर्मसिंह गुर्जर, समूह–फूलवाड़ी, उम्र–9 वर्ष

दीपेन्द्र, उम्र– 12 वर्ष, समूह–गाँधी

खेत की करे रखवाली।
ईधर से आया लाला।
लाला ने बजाई घंटी।
इधर से सुने बंटी।

पवन गुर्जर,
समूह–सागर, उम्र–9 वर्ष

कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ
बात में जोड़ो बात, गीत में कड़ी लगाओ

एक बार प्याज और लहसून दो दोस्त थे।

एक दिन दोनों घुमने जा रहे थे। चलते–चलते रास्ते में उनको टमाटर और मिर्ची दोनों झूला खाते मिल गये। प्याज और लहसुन उन दोनों को देखकर बहुत खुश हुए। वे उन दोनों के पास जाकर बोले की हमें भी झूला खिलाओ। टमाटर और मिर्ची उनसे बोले कि हम तो आपको जानते ही नहीं आप कौन हो, कहाँ से आये हो ....।

अशोक केवट, *8 वर्ष, समूह–सागर, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा द्वारा शुरू की गई कहानी को पूरा करके मोरंगे को भेजो।*

पिंकी गुर्जर,
समूह–वीर शिवाजी,
उम्र–10 वर्ष

बदली आई बदली आई
सबके लिए पानी लाई.....

योगेश मीना, *उम्र–12 वर्ष, समूह–गाँधी द्वारा शुरू की गई कविता को पूरा करके मोरंगे को भेजो।*

तेरी मेरी, मेरी तेरी बात

शरबत प्रजापत, समूह–सितारे, उम्र–6 वर्ष

प्रिय संपादक महोदय,

आप मेरी कहानी व कविता क्यों नहीं छापते हो? मैं अपनी कहानी, कविताओं मैं क्या बदलाव करूँ, अबकी बार मैं ज्यादा मेहनत करूँगा, फिर देखता हूँ कि मेरी कहानी व कविता छपती है या नहीं। पहले आप गीतों की किताबें भेजते थे, अब क्यों नहीं भेजते हो? हम जो चुटकले लिखते हैं उन्हें आप क्यों नहीं छापते हो?

मोनू मीना, समूह–खुशबू, उम्र–10 वर्ष

मैंने नवम्बर–दिसम्बर, 2015 का अंक पढ़ा। मोरंगे में मुझे नीरू, उम्र–9 वर्ष, समूह–सागर, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा की कविता अच्छी लगी। इसमें एक कविता देश–विदेश से आती चिट्ठी, लेखक–शिवानी, उम्र–12 वर्ष, समूह–शीशम, राजकीय बालिका उच्च प्राथ. विद्या. आवासन मण्डल की यह कविता आपने मोरंगे में छाप दी जबकी यह कविता शिवानी द्वारा नहीं लिखी गई है यह कविता कक्षा 3 की पर्यावरण की किताब में 100 नम्बर के पृष्ठ पर है। हम जो इतनी अच्छी कविता, कहानी लिखते हैं आप उन्हें छापते ही नहीं हो।

रजनी प्रजापत, उम्र–10 वर्ष, समूह–फूल

प्रिय मोनू और रजनी, मोरंगे की ओर से आपको नमस्ते।

आपने आपकी कविता, कहानी व चित्र मोरंगे में नहीं छपने की जो शिकायत लिखकर भेजी है। वह बिल्कुल वाजिब है। लेकिन प्यारे बच्चो हमारे पास हर सप्ताह आपकी ओर से ढेरों रचनाएँ आती हैं, अगर उन सबको एक साथ छापने लगें तो कम से कम हमें सौ–दो सौ पन्ने तो चाहिए ही। तुम तो जानते हो मोरंगे के पास तो कुल चौबीस ही पन्ने होते हैं। इसलिए बहुत सारी रचनाओं में से छाँटकर कुछ गिनी–चुनी रचनाएँ ही देनी पड़ती है। पर हम कोशिश करते हैं हर बार नए बच्चों की, लेकिन अच्छी रचनाएँ छपे। ऐसा नहीं कि आप लोगों की रचनाएँ अच्छी नहीं होती लेकिन हम चाहेंगे कि हम आपको आपकी सबसे अच्छी रचनाओं के साथ छापें। अपने रचनात्मक कार्य को जारी रखें। आगे के अंकों में सबको उनकी अच्छी कविता, कहानियों और चित्रों के साथ जगह मिलेगी।

शिवानी द्वारा लिखी गई कक्षा– 3 की कविता पर ध्यान दिलाने के लिये धन्यवाद। हमे यह जानकर भी अच्छा लगा कि आप मोरंगे को इतने ध्यान से पढ़ते हो। हम सभी बच्चों और शिक्षकों से अनुरोध करते हैं कि वे इस प्रकार की गलती न करे और अपनी मौलिक रचना ही मोरंगे को भेजे। लम्बे समय के बाद पत्रों का सिलसिला शुरू हुआ है पत्र लिखना जारी रखें।

मोरंगे।

अक्षय बैरवा, समूह–प्रताप, उम्र–12 वर्ष

पहेलियों के ज़वाब –

1. ओस 2. तराजू 3. फावड़ा 4. बारिश 5. होंठ

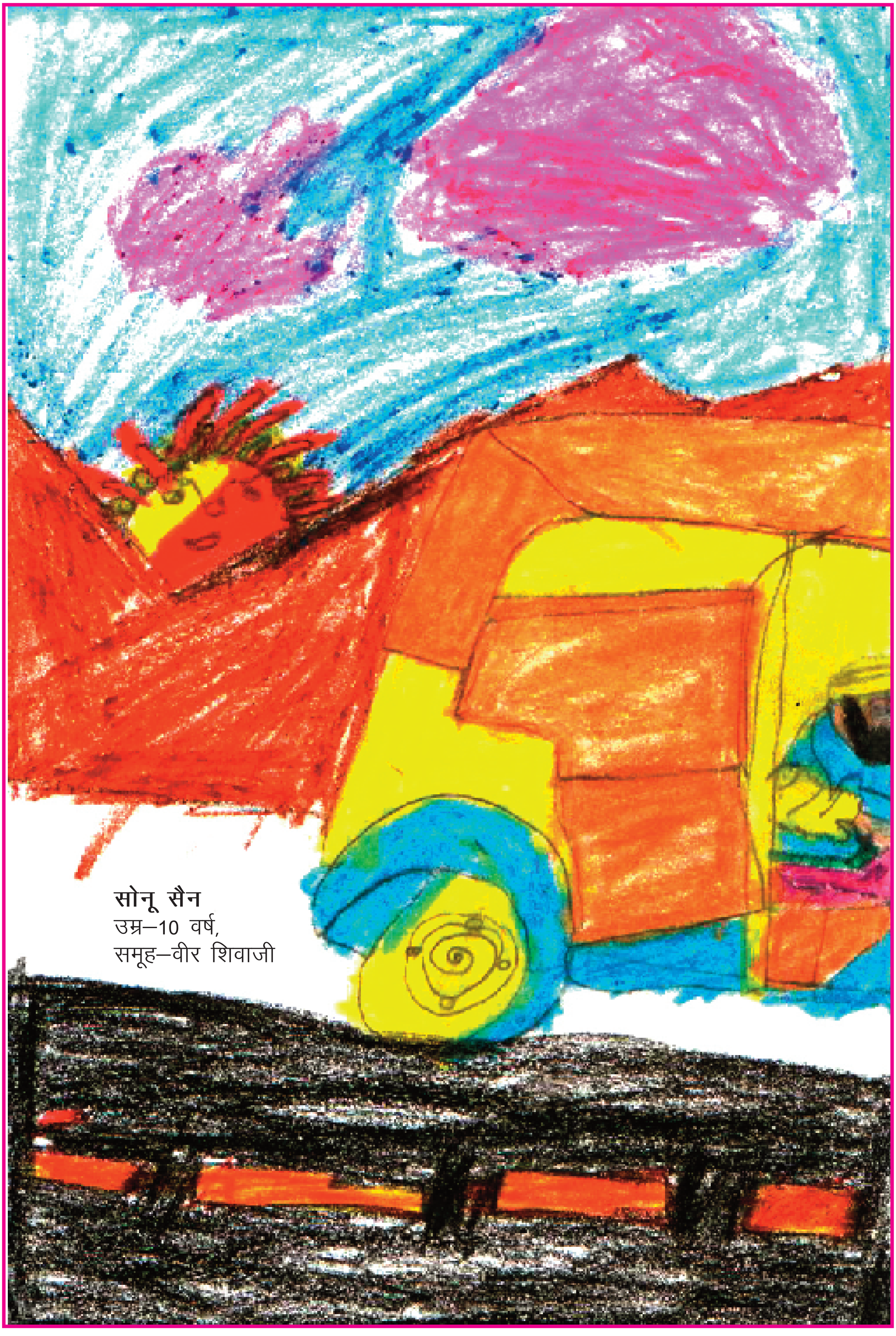

सोनू सैन
उम्र–10 वर्ष,
समूह–वीर शिवाजी